

## मौसम मानचित्र (Weather Map)

बोलेंद्र कुमार अगम,  
सहायक प्राध्यापक भूगोल,  
राजा सिंह कॉलेज सिवान

किसी निश्चित स्थान पर किसी विशेष समय पर प्रेक्षित वायुमंडलीय दशाओं को उस स्थान का **मौसम** कहते हैं। जैसे किसी स्थान का प्रातः कालीन अथवा संध्याकालीन मौसम। यह अस्थाई अथवा अल्पकालिक होता है। अतः किसी स्थान पर एक ही दिन में कई प्रकार के मौसम देखे जा सकते हैं।

इसके विपरीत किसी बड़े भूभाग के औसत मौसम को **जलवायु** करते हैं। किसी क्षेत्र की जलवायु निश्चित करने के लिए उस क्षेत्र में लंबे समय (जैसे 30-35 साल) के प्रेक्षित मौसम की औसत दशाएं ज्ञात की जाती हैं। मौसम की तरह जलवायु के परिवर्तन अल्पकालीन नहीं होते। यद्यपि संसार के विभिन्न भागों की जलवायु परिवर्तन होते रहे हैं परंतु ये परिवर्तन दीर्घकाल के पश्चात हुए थे।

### मौसम मानचित्र

मौसम मानचित्र वह मानचित्र है जो संसार या इसके किसी भाग के किसी विशेष समय के तापमान एवं वायुदाब की दशाओं, वायु की दिशा और गति, आर्द्रता, बादलों, वर्षण की प्रकृति आदि को संख्यात्मक तथा सांकेतिक चिन्हों के द्वारा प्रदर्शित करता है।

### मौसम मानचित्र का महत्व

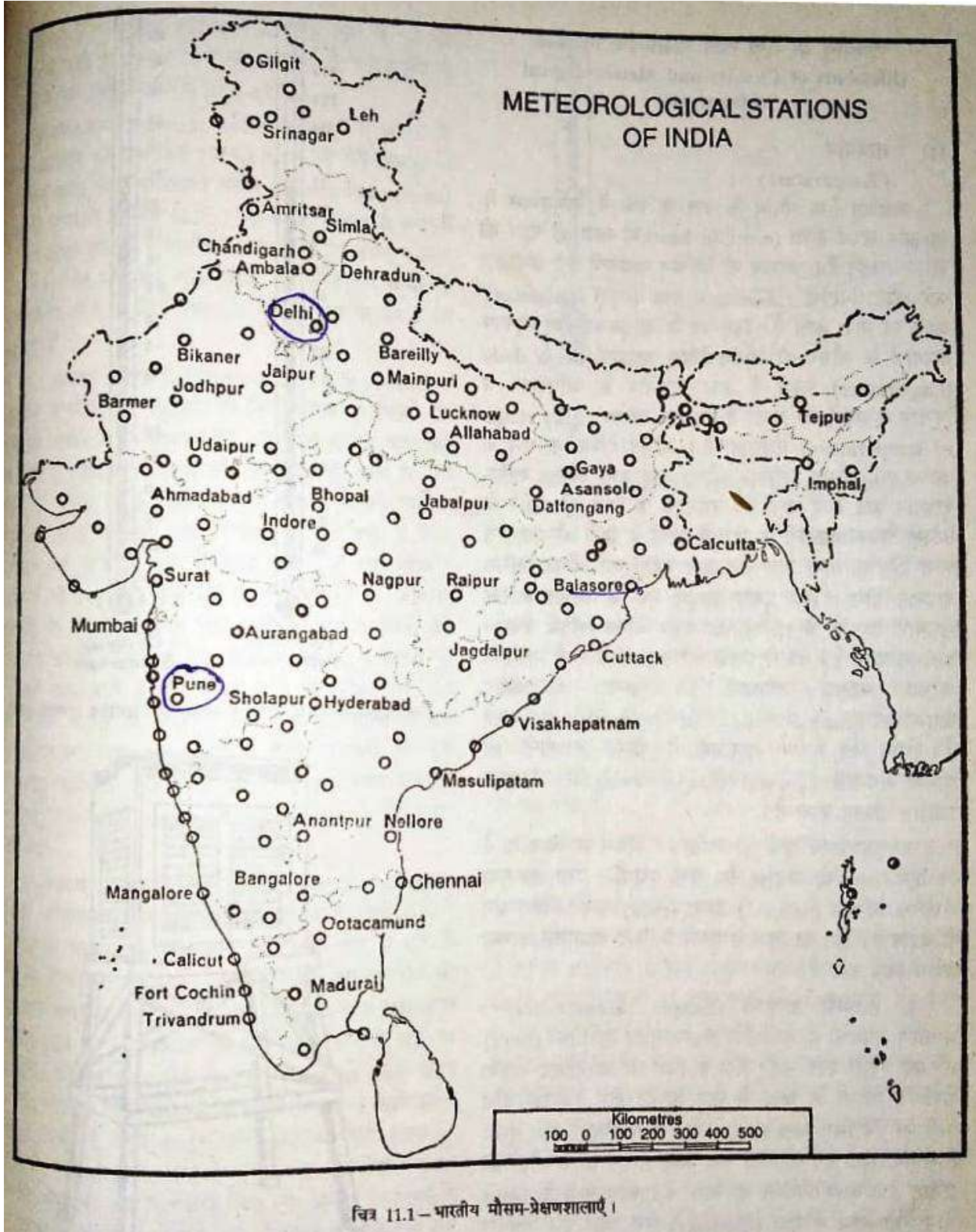
मौसम मानचित्र का हमारे दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। इन मानचित्रों की सहायता से किसी स्थान पर आगामी दिनों के मौसम का पूर्वानुमान लगाया जा सकता है तथा समय से पूर्व आवश्यक सावधानी बरतकर विपरीत मौसम के फलस्वरूप होने वाली संभावित विपत्ति से बचा जा सकता है। नौ संचालन तथा वयुयानों की सुरक्षित उड़ान के लिए मौसम का पूर्वानुमान होना परम आवश्यक है। मौसम की पूर्व जानकारी के आधार पर समुद्र तट के किनारे स्थित बस्तियों में रहने वाले लोगों को समुद्री विक्षोभ के प्रति समय से सावधान कर के अपार धन एवं जन हानि से बचाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त कृषि कार्यों में भी मौसम संबंधी पूर्व जानकारी बहुत लाभप्रद होती है। आगामी समय में होने वाली वर्षा की संभावित मात्रा एवं वितरण से उत्पन्न बाढ़ एवं अकाल की समस्या से बचने के लिए समय से पूर्व आवश्यक कदम उठाए जा सकते हैं।

### मौसम मानचित्र का इतिहास एवं भारतीय मौसम प्रेक्षणशालाएं

सर्वप्रथम मौसम मानचित्र की आवश्यकता नाविकों को महसूस हुई। सन 1688 में एडमंड हैली ने 30° उ. से 30° द. अक्षांश के बीच व्यापारिक पवन और प्रचलित मानसून की दिशाओं को दिखाने वाले मौसम मानचित्र को प्रकाशित किया। निश्चित समय पर रिकॉर्ड किए गए परीक्षणों को कोड द्वारा पूर्वानुमान केंद्रों पर प्रेषित किया जाता है। केंद्रीय कार्यालय इन सूचनाओं का अभिलेखन करता है। इसके आधार पर मौसम मानचित्र की रचना की जाती है। ऊपरी वायु प्रेक्षणों को पहाड़ी स्टेशनों, हवाई जहाज, पायलट गुब्बारों आदि द्वारा प्राप्त करके अंकित किया जाता है।

भारत में एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल के प्रयत्नों के फलस्वरूप मौसम विज्ञान संबंधित सेवा प्रारंभ हुई तथा 1864 ई० में सरकार द्वारा शिमला में मौसम विज्ञान कार्यालय की स्थापना की गई। प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात

सरकारी मौसम विज्ञान विभाग का विस्तार हुआ तथा इसके केंद्रीय कार्यालय को शिमला से हटाकर पुणे में स्थापित किया गया। इस केंद्रीय मौसम परीक्षणशाला में भारत के विभिन्न भागों से प्राप्त मौसम संबंधित सूचनाओं के आधार पर दैनिक मौसम मानचित्र बनाए जाते हैं तथा आगामी दिनों के मौसम का पूर्वानुमान लगाया जाता है। इस समय देश में लगभग 500 छोटी-बड़ी प्रेक्षणशालाएं हैं जहां पर प्रेक्षकों के द्वारा नियत समय पर मौसम संबंधी परीक्षण किए जाते हैं।



चित्र 11.1 - भारतीय मौसम-प्रेक्षणशालाएं।

चित्र स्रोत: प्रायोगिक भूगोल: जे पी शर्मा

भारतीय मौसम प्रेक्षणशालाओं की पांच श्रेणियां हैं:

1. स्वतः अभिलेखी (Self Recording) जैसे तापलेखी (Thermograph)
2. वायुदाब लेखी (Barograph)
3. आर्द्रता लेखी (Hygograph)
4. पवन वेग लेखी तथा (Anemograph)
5. रेनोग्राफ (Rainograph)

यह प्रेक्षणशालाएं केंद्रीय मौसम प्रेक्षणशाला को दिन में दो बार मौसम संबंधित सूचनाएं भेजती हैं। केंद्रीय प्रेक्षणशाला को मौसम संबंधी सूचना प्राप्ति का एक अन्य महत्वपूर्ण स्रोत कृत्रिम मौसम उपग्रह है। इन उपग्रहों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर मौसम पूर्वानुमान का कार्य काफी सीमा तक सरल हो गया है।

.....क्रमशः

\*\*\*\*\*  
सन्दर्भ: प्रायोगिक भूगोल: जे पी शर्मा, सरस्वती भूगोल: डी आर खुल्लर  
\*\*\*\*\*